IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

इतिहास शिक्षण की विधियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ सुधीर कुमार सिह

सहायक प्रोफेसर (बी.एड)

महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

हरदोई

सारांश– प्रस्तुत आलेख में इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त होने वाली शिक्षण विधियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया हैं। कक्षा–कक्ष में विषयवस्तु को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने और छात्रों के अधिगम स्तर मे वृद्धि के लिए किए गए प्रयास जिनके द्धारा ज्ञान को सरलीकृत ढंग से छात्रों तक पहुँचाया जा सके। इतिहास मुख्य रुप से अतीत की घटनाओ का अध्ययन करता हैं और भविष्य की आशा प्रस्तुत करता है।छात्रों को इतिहास का ज्ञान वैज्ञानिक एवं वस्तुनिष्ठ ढंग से प्रदान करने के लिए इतिहास शिक्षण की परम्परागत विधियों का समसामयिक परिस्थितियों में इतिहास के ज्ञान का संचरण छात्रों तक प्रभावशाली ढंग से किया जा सकें।

प्रयुक्त शब्द– इतिहास, शिक्षण, विधिया,.छात्र,.शिक्षक, अध्ययन

अध्ययन उद्देश्य–1.वर्तमान मे प्रचलित शिक्षण विधियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

2.परम्परागत शिक्षण विधियों मे वस्तुनिष्ठता का अध्ययन करना।

3.शिक्षण विधियों की उपयोगिता का विश्लेषण करना।

प्रस्तावना– इतिहास को सामान्य रुप मे भूतकाल में जो कुछ घटित हुआ हैं वह सब इतिहास के क्षेत्र आता है। **रैप्सन'** ने कहा है की 'इतिहास विचारों की प्रगति अथवा घटनाक्रमों का विवरण प्रस्तुत करता हैं। इतिहास विषय का ज्ञान छात्रों तक प्रभावशाली ढंग से पहुचाने के लिए विभिन्न प्रकार की शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता हैं।शिक्षण विधि तभी प्रभावशाली हो सकती हैं जब वह छात्रों के मानसिक स्तर एवं विषय वस्तु की प्रकृति को व्यक्त करती हैं।शिक्षण पद्धति एक क्रिया न होकर प्रक्रिया है. जिसके माध्यम से विद्यार्थी अधिगमित होता हैं। शिक्षण पद्धति अध्यापक का पथ–प्रदर्शित करती हैं उसे विद्यार्थियों के बारे में उचित निर्णय लेने के लिए उचित परिस्थिति का निर्माण करती है जैसा कि **बेस्ले** महोदय ने कहा है कि "शिक्षण विधि शिक्षक द्वारा संचालित वह क्रियाएं हैं जिनसे विद्यार्थियों को ज्ञान की प्राप्ति होती हैं। प्रसिद्व शिक्षा शास्त्री **जॉन अमोस कमेनियस** ने अपनी प्रसिद्व पुस्तक **"द ग्रेट डिडैक्टिक"**में शिक्षण सिद्वान्तों पर अपने महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए हैं।इस सम्बन्ध मे कमेनियस ने कहा कि समस्त विषय सामाग्री को एक निश्चित क्रम मे व्यवस्थित किया जाय तथा शिक्षक विभिन्न शिक्षण विधियों के माध्यम से विधार्थियों की ज्ञानेन्द्रियों को उत्प्रेरित करे। **जीन–जैक्स रुसो** ने अपनी पुस्तक **"एमील"**मे

शिक्षण विधियों के बारे मे विस्तार से विवेचन किया हैं। निश्चित रुप से अध्यापक के सफल शिक्षण के लिए शिक्षण विधियों का महत्वपूर्ण स्थान हैं। इतिहास के वस्तुनिष्ठ ज्ञान के लिए इतिहास शिक्षण मे प्रयुक्त होने वाली विधियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन नितान्त आवश्यक हैं।

विवेचना—किसी भी विषय की शिक्षण पद्धति की अपनी मूलभूत विशेषताएं एवं एक निश्चित मापदण्ड होता हैं,ताकि विषयगत उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकें।विद्यार्थियों मे तार्किक शक्ति, निर्णय क्षमता,एवं विश्लेषण शक्ति विकास करती हैं एवं व्यक्तिगत विभिन्नताओं को पूर्ण मान्यता देती हैं। उत्तम शिक्षण विधि क्रियाशीलता,मनोवैज्ञानिकता,व्यावहारिकता,एवं कक्षा—गत समस्याओं के समाधान में सहायक होती हैं। **विनिंग एवं विनिंग** ने कहा है कि``सर्वश्रेष्ठ विधि वही है,जो अभिरुचि ं प्रयासो को बढावा दे क्रियाशीलता एव अभिक्रियाशीलता को विकसित करें विधार्थियों के स्वतन्त्र चिन्तन और निर्णय को उद्रीप्त करे तथा सहयोग एवं समाजीकरण को स्थापित करे।"

इतिहास का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक होता है, जिसमे मानवीय पर्यावरण एवं व्यवहार का अध्ययन ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे किया जाता हैं।इतिहास मानव समाज की संस्कृति के विकास को रेखांकित करता है,जिसके आधार पर राष्ट्रीय दृष्टिकोणों को नूतन आयाम प्रदान किया जाता है। इतिहास विषय की व्यापकता को देखते हुए किसी एक विधि से लक्ष्यों की प्राप्ति नही हो सकती है। इतिहास शिक्षण मे प्रयुक्त विधियो का क्रमवार विवरण निम्नवत ढंग से प्रस्तुत किया जा रहा हैं।

कहानी—कथन विधि—यह इतिहास शिक्षण को मौखिक ढंग से प्रस्तुत करने की सबसे प्रभावशाली विधि हैं,इसमे ऐतिहासिक घटनाओं,नायको एवं विकास को कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।इस विधि की प्रभावशीलता अध्यापक के प्रस्तुतीकरण एवं निरपेक्षता के भाव पर आधारित होती है।कहानी—कथन विधि तभी अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर सकती है जब उसके प्रस्तुतीकरण मे रोचकता एवं क्रमबद्वता हो। कहानी—कथन विधि की मुख्य विशेषता यह है कि यह छात्रों मे कल्पना शक्ति का विकास करती है , यह विधि छोटे बच्चों के लिए बहुत ही उपयोगी होती है। कहानी—कथन विधि मे कभी—कभी व्यक्तिगत विचार और धारणएं प्रभाव डालती हैं।यह विधि स्वाध्याय एवं अभ्यास का अवसर प्रदान करती है । कहानी—कथन विधि को तार्किक बनाने के लिए उसमे वस्तुनिष्ठता , क्रमबद्वता,निरपेक्षता के मापदण्डों का प्रयोग अध्यापक को करना चाहिए एवं प्रभावशीलता को बढाने के लिए कहानी का नाट्यरुपांतरण भी करने का प्रयास अध्यापक को करना चाछिए।

स्रोत विधि—ऐतिहासिक घटनाओं के अध्ययन के लिए स्रोत विधि अत्यंत प्रभावशाली और महत्वपूर्ण हैं,इस विधि का मुख्य आधार ऐतिहासिक स्रोत होते हैं। अतीत की घटनाओं की सत्यता को सात्यापित करने के लिए ऐतिहासिक अवशेष, अभिलेख, सिक्के ,पाण्डुलिपिया इत्यादि प्रमुख साक्ष्य होते हैं। **एस0बी0 ऐथा** ने लिखा है "स्रोत अतीत की घटनाओं द्वारा छोडे गए अवशेष है,माना कि ऐतिहासिक घटनायें वास्तविक रुप में घटित होती हैं,किन्तु वें दीर्घ काल तक अपने वास्तविक स्वरुप मे नही रह पाती हैं,किन्तु इन घटनाओं के द्वारा छोड़े गए अवशेष चिन्ह ही इन्हें वास्तविकता प्रदान करते है। इतिहास इन्हीं अवशेष चिन्हों पर कार्य करते हैं और इन्हीं अवशेष चिन्हों की सहायता से अतीत की घटनाओं तार्किक तथा क्रमबद्व ज्ञान प्रस्तुत करते हैं''

ऐतिहासिक स्रोतों अध्ययन के लिए इसको मुख्य रुप से तीन भागों मे विभाजित किया गया हैं, पुरातात्विक स्रोत, साहित्यिक स्रोत

पुरातात्विक स्रोत – पुरातात्विक स्रोत ऐतिहासिक घटनाओं को सत्यापित करते है, इस स्रोत मे मुख्य रुप से शिलालेख,मुद्रा, विभिन्न प्रकार के सिक्के तथा स्मारकों को मुख्य रुप से सम्मिलित किए जाते हैं

साहित्यिक स्रोत– साहित्यिक स्रोत भारतीय इतिहास को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं,साहित्यिक स्रोतों का जब हम वर्गीकरण करते हैं तो उसे मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित करते हैं प्रथम धार्मिक साहित्य और दूसरा लौकिक साहित्य ।

धार्मिक साहित्य़ में मुख्य रुप से धार्मिक ग्रन्थों को सम्मिलित किया जाता हैं,ये ग्रन्थ तत्कालिन सामाजिक,राजनैतिक,आर्थिक,जीवन पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं।लोगो का जीवन दर्शन,रीति–रिवाज ,रहन सहन इत्यादि के बारे मे महत्वपूर्ण एवं प्रांसगिक जानकारी प्रदान करते है। लौकिक साहित्य किसी धर्म विशेष से सम्बन्धित नही होते थे, यह निरपेक्षता को व्यक्त करते थे। लौकिक साहित्य को भी निजी साहित्य एवं सार्वजनिक साहित्य मे विभाजित किया गया था। निजी साहित्य मुख्य रुप से व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित होते हैं जबकि सार्वजनिक साहित्य मे राजा द्धारा जारी किए गए फरमान, आदेश, सन्धि पत्र आदि को सम्मिलित किया जाता है।

विदेशी प्रमाण–समय–समय पर विदेशी विद्धानों का यात्रा वृतान्त, विदेशों मे प्राप्त अभिलेख,सिक्के,नगर सभ्यताएं,ऐतिहासिक घटनाओं को निर्धारित करने मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। ह्वेनसांग,फह्यान,इब्नेबतूता,मार्कीपोलो इत्यादि के विवरण से तत्कालिन समाज,शासन व्वस्था को प्रदर्शित करते हैं।

स्रोत विधि की अपनी कुछ कमियां होती हैं यह विधि काफी खर्चीली होती है इस विधि द्वारा प्राप्त घटनाओं और स्रोतों का संबंध स्थापित करने में कठिनाई का अनुभव होत है हर कोई अध्यापक इस पद्धति का प्रयोग नहीं कर सकता है इस पद्धति का प्रयोग केवल निपुण अध्यापक ही कर सकते हैं यह पद्धति छोटी कक्षाओं में इतिहास पढ़ने के लिए उपयुक्त नहीं है इसका प्रयोग माध्यमिक कक्षाओं से लेकर उच्च कक्षाओं पर ही किया जा सकता है निश्चित रूप से यदि शिक्षक इतिहास शिक्षण को

स्रोत पद्धति प्रयोग कर वैज्ञानिक एवं वस्तुनिष्ठ से शिक्षण करे तो यह इतिहास शिक्षण की सबसे उत्तम और प्रभावशाली विधि हो सकती हैं।

योजना–पद्धति–योजना पद्धति का जन्म मुख्य रूप से प्रयोजनवादी संप्रदाय के प्रयासों के फलस्वरूप हुआ हैं। इस पद्धति को शिक्षा के क्षेत्र में लाने का श्रेय मुख्य रूप से जॉन डीवी को जाता है जो प्रयोगवादी दर्शन के महत्वपूर्ण प्रतिपादक थे । इतिहास शिक्षण में योजना पद्धति एक प्रभावशाली विधि के रूप में प्रयोग की जाती है। योजना को विभिन्न विद्वानों ने अपने–अपने ढंग से परिभाषित किया है लेकिन योजना पद्धति के जन्मदाता **विलियम हर्ड किलपैट्रिक** ने योजना की परिभाषा देते हुए कहा है कि"योजना एक ऐसी सोउद्देश्य क्रिया है जो सामाजिक वातावरण में पूर्ण तन्मयता के साथ संपन्न की जाती है"

इसी तरह से **जे.के. स्टीवेंसन** ने लिखा है की"योजना एक ऐसा समस्यात्मक कार्य है जो प्राकृतिक व्यवस्थाओं में पूरा किया जाता है"

इतिहास शिक्षण में अतीत की घटनाओं और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करने के लिए योजना पद्धति का उपयोग वास्तविक एवं प्रयोगात्मक अवस्थाओं में संपन्न किया जाता है यदि इसका सही ढंग से प्रयोग किया जाए तो निश्चित रूप से अतीत के बारे में प्रभावशाली प्रमाण इकट्ठा किया जा सकता है

इतिहास शिक्षण में योजना पद्धति से शिक्षण करते समय छात्रों के सहयोग के लिए एक उपयुक्त समस्या का निर्माण किया जाता है, समस्या का निर्माण अत्यंत सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए समस्या कृत्रिम तथा काल्पनिक मालूम न होकर वास्तविक एवं सजीव मालूम पड़े ऐतिहासिक समस्याओं का उपयुक्त चयन हो जाने के उपरांत हम योजना पद्धति विधि से ऐतिहासिक समस्या का अध्ययन करने के लिए मुख्य रूप से हम छह सोपानों का प्रयोग करते हैं

- परिस्थिति का निर्माण
- योजना का चुनाव
- समस्या की योजना बनाना
- योजना को क्रियान्वित करना
- किए गए कार्यों का मूल्यांकन करना
- किए गए कार्यों का लेखा प्रस्तुतीकरण करना

एक अच्छी योजना व्यावहारिक तथा वास्तविक होती है चुनी गई समस्या ऐसी हो जिस पर सरलता से प्रयोग किया जा सके।योजना पद्धति सदैव छात्रों के पूर्व अनुभव पर आधारित होती है और वह छात्रों को नए–नए अनुभव प्रदान करती है। योजना बनाते समय अध्यापक को यह भी ध्यान रखना चाहिऐ की योजना छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल होनी चाहिएं। इतिहास शिक्षण में योजना पद्धति अत्यंत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि यह पद्धति उपयोगिता, वास्तविकता, स्वतंत्रता, क्रियाशीलता वैज्ञानिकता,एवं मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित होती हैं । योजना पद्धति करके सीखने के सिद्धान्त पर बोल देती है। यह छात्रों के शारीरिक मानसिक क्रियाओं का सुंदर समन्वय होने के कारण इतिहास शिक्षण में यह पद्धति अत्यंत प्रभावशाली है। योजना पद्धति थार्नडाइक के तीन प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित होती है थार्नडाइक का पहला सिद्धांत था प्रभाव का नियम ,दूसरा सिद्धांत था तत्परता का नियम और तीसरा सिद्धांत था अभ्यास का नियम, इन तीनों विधियों का प्रयोग करके छात्र नवीन ज्ञान को आसानी से ग्रहण कर लेता है । योजना पद्धति छात्रों में सहयोग सहानुभूति सहिष्णुता तथा पारस्परिक प्रेम की भावना को जाग्रत करती है ,यदि योजना पद्धति का चुनाव करते समय अध्यापक छात्रों की मानसिक स्तर और योजना के प्रस्तुतीकरण का वास्तविक एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया जाय एवं ऐतिहासिक समस्याओं का चयन उपयुक्त तरीके से करके उसमें वैज्ञानिकता का भाव ले तो निश्चित रूप से योजना पद्धति इतिहास शिक्षण की सबसे प्रभावशाली विधि बन जाएगी।

वाद विवाद विधि– वादविवाद विधि को समान रूप से हम चर्चा विधि या तर्क विधि के रूप में भी जानते हैं वर्तमान समय में यह विद्यार्थियों को कक्षा में अधिक से अधिक सक्रिय रखती है तथा विषय वस्तु को अधिक प्रभावशाली ढंग से अधिगमित कराती हैं। वाद विवाद विधि को **सेटलर एवं मिलर** ने परिभाषित करते हुए कहा है कि वाद विवाद दो या दो से अधिक व्यक्तियों द्वारा सहयोगपूर्ण ढंग से विचारों एवं सूचनाओं का आदान–प्रदान करके किए जाने वाला ऐसा विचारशील चिंतन है जिसे किसी समस्या का समाधान या उसकी विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

जेम्स एमिली के अनुसार वाद विवाद एक शैक्षिक सामूहिक प्रक्रिया है जिसमें अध्यापक एवं छात्र सहयोग पूर्ण ढंग से किसी समस्या या प्रकरण पर बातचीत करते हैं। इतिहास शिक्षण में वाद विवाद विधि मे मुख्य रूप से चार तत्वों का प्रयोग किया जाता है और इसमें सबसे प्रमुख भूमिका शिक्षक की होती है, जो किसी भी वाद विवाद या विचार गोष्ठी की सफलता उसके सफल नेतृत्व पर ही निर्भर करती है समान रूप से वाद विवाद विधि से इतिहास विषय में शिक्षण हेतु निम्न पदों का ध्यान रखा जाता है

- ❖ समस्या की प्रस्तुति
- ❖ समस्या एवं निराकरण के स्रोतों से परिचित कराना
- ❖ छात्रों द्वारा वाद विवाद से पूर्व की जाने वाली तैयारी
- ❖ वाद विवाद का प्रभावशाली संचालन
- ❖ वाद विवाद के उपरांत निष्कर्ष का उचित ढंग से संकलन एवं उसका सारांश प्रस्तुत करना
- ❖ वाद विवाद के उपरांत समस्त क्रियाविधि का मूल्यांकन करना

निश्चित रूप से इतिहास शिक्षण में वाद विवाद विधि एक महत्वपूर्ण विधि है जो किसी घटना पर या ऐतिहासिक तथ्यों पर विचार करती है और एक उपयुक्त निष्कर्ष प्राप्त करती है इस विधि का प्रयोग करके छात्रों में सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता तथा मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर किसी घटना के बारे में वास्तविक चिंतन करना है ।इस विधि की सबसे बड़ी कमी है की यह विधि तभी सफल हो सकती है जब कुशल शिक्षक उपलब्ध हो यह उच्च कक्षाओं में ज्यादा प्रभावशाली ढंग से प्रयोग की जा

सकती है इस विधि में समय और शक्ति अधिक प्रयुक्त होती है।

निष्कर्ष रूप में यदि इतिहास शिक्षण विधि में इस विधि का प्रयोग प्रभावशाली ढंग से तभी किया जा सकता है जब शिक्षक को संबंधित समस्या का पूर्ण रूप से ज्ञान हो शिक्षक निरपेक्ष हो और वाद विवाद करते समय लोकतांत्रिक सिद्धांतों का पूर्णतया पालन किया जाए।

सामाजीकृत विधि – इतिहास शिक्षण में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को और प्रभावशाली बनाने के लिए छात्रों में सहयोग एवं सद्भाव के आधार पर कार्य करके ज्ञान प्राप्त करने के लिए समाजीकृत विधि का प्रयोग किया जाता है

समाजीकृत विधि को परिभाषित करते हुए **बाइनिंग एवं बाइनिंग** ने लिखा है कि यह एक ऐसी विधि है जिसमें शिक्षक द्वारा कालांश को कक्षा को अथवा विद्यार्थियों द्वारा चुनी गई समिति को सौंप दिया जाता है तथा वह स्वयं को कक्षा कार्य से कर लेता है ।

सामाजीकृत विधि इतिहास शिक्षण में मुख्य रूप से निम्न उद्देश्यों को प्रस्तुत करती है

- ❖ छात्रों में सामूहिक गुणों का विकास करना
- ❖ सहयोगपूर्ण चिंतन एवं मनन का विकास करना
- ❖ विभिन्न प्रकार की सामाजिक परिस्थितियों द्वारा सामाजिक दृष्टिकोण विकसित करना
- ❖ रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करना

निष्कर्ष रूप से यह कह सकते हैं कि इतिहास शिक्षण में सामाजीकृत विधि का मुख्य उपयोग तत्कालीन समय की परिस्थितियों का सामाजिक दृष्टिकोण से अध्ययन करना है उसे उस समय का सामाजिक जीवन, सहयोग, सद्भाव, शिष्टाचार इत्यादि का आकलन करना सामाजिक नैतिक शास्त्र का ज्ञान करना इस विधि का मुख्य उद्देश्य होता है यदि यह विधि सही ढंग से प्रयोग में लाई जाए तो निश्चित रूप से तत्कालीन ऐतिहासिक घटनाओं का सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन अत्यंत सहज एवं सरल हो जाता है

निष्कर्ष–उपरोक्त विधियों के अतिरिक्त इतिहास शिक्षण मे प्रश्नोत्तर विधि,व्याख्यान विधि,समस्या–समाधान विधि ,पर्यवेक्षण विधि इत्यादि का इतिहास विषय मे अधिगमशीलता बढाने के लिए प्रयोग किया जाता हैं।निश्चित रुप से इतिहास शिक्षण मे प्रयुक्त होने वाली विधियों मे यदि वस्तुनिष्ठता,वैज्ञानिकता,निरपेक्षता,का उचित समावेश हो तो वह अपने उद्देश्यों को पूर्णतया प्राप्त करने मे सफल होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

- वर्मा,एस.जी0 2010 ,शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबन्ध के मूलाधार
- त्यागी.रजनी 2018, इतिहास शिक्षण
- उपाध्याय,सुधा 2006 इतिहास शिक्षण
- गंगवार,सुमित 2022 नवाचारी शिक्षण विधियों की प्रभावशीलता : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
- नमीता सी 2018 माडर्न मेथड ऑफ टीचिंग
- शर्मा एम.पी एवं सिंह कर्ण 2018 गणित शिक्षण विधि
- गुप्ता पी एस एवं गुप्ता अलका 2022 आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन
- पी. एन. यादव 2023 शिक्षण सिद्धांत
- सिंह.रामपाल एवं राजकुमार 2022 इतिहास शिक्षण
- शरीन0 शशिकला एवं शरीन0अंजनी 2010 शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation